

तुम्हें हम चाहतीं इतना मगर तुम छोड़ जाते हो

गोपी विरह गीत : तुम्हें हम चाहतीं इतना मगर तुम छोड़ जाते हो ।
भजन रचना : प. पू. श्री श्रीकान्त दास जी महाराज ।
स्वर : सुभाष सिंह राजपूत जी ।

तुम्हें हम चाहतीं इतना, मगर तुम छोड़ जाते हो ।
बढ़ाये प्रेम जिस दिल में, उसी को तोड़ जाते हैं ॥

बतायें किस तरह तुमको, तुम्हें हम चाहतीं कितना ?
तरस जाते मेरे नैना, मगर मुख मोड़ जाते हो ॥
तुम्हें...

सुनेगा कौन दुख मेरा ? तुम्ही बस एक अपने हो ।
मगर तुम भी हमें तजकर, कहाँ ? किस ओर जाते हो ॥
तुम्हें...

बता दे आज सच मोहन, मेरा क्या प्रेम झूठा था ।
कान्त यदि सच नहीं यह तो, हमें क्यों छोड़ जाते हो ॥
तुम्हें...

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/35442/title/tumhe-hum-chahati-itana-magar-tum-chhod-jate-ho>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |